दैनिक भास्कर
26/6/14

टोंक भास्कर

अविकानगर संस्थान के निखार पर खर्च होंगे बीस करोड़ रुपए

पुराने आवास भवनों को वाई फाई एवं डिजिटल करने की योजना शुरू

भास्कर न्यूज | मालपुरा

मालपुरा. केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, जिसे अत्याधुनिक बनाया जाएगा।

मालपुरा. अविकानगर में तैयार की गई उन्नत नस्ल की भेड़ें।

केंद्रीय भेड़ एवं अनुसंधान संस्थान अविकानगर को अंतर्राष्ट्रीय स्तर का अत्याधुनिक व आकर्षक बनाने के लिए विभिन्न योजनाओं के तहत करीब बीस करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे। संस्थान में पचास साल पूर्व निर्मित प्रशासनिक भवन, वैज्ञानिक प्रयोगशाला भवन सहित गोदाम, शेड के जीर्णोद्धार व ऑडिटोरियम के आधुनिकीकरण, साइंटिफिक लेबोरेटरी व अन्य पुराने जर्जर भवनों की तैयार कराने पर उक्त राशि खर्च करने के प्रस्ताव को मंजूरी दी गई है। पुराने तरीके से बने आवास भवनों व क्लीननेस, संस्थान को वाई फाई एवं डिजिटल करने की योजना शुरू की गई है। संस्थान में पहली बार बड़ी राशि खर्च कर करने की योजना के कारण संस्थान में गड़बड़ी के आरोप भी लगाए जाने लगे हैं। केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान निदेशक डॉ. एस.एम.के. नकवी ने बताया है कि केंद्र सरकार की योजना अनुसार संस्थान की सीधी मॉनिटरिंग की सुविधा शुरू की जाएगी। डॉ. नकवी के अनुसार आगामी दो सालों में संस्थान संस्थान का स्ट्रक्चर बदल दिया जाएगा। पुराने तीन भवन अपडेट किए जा रहें है तथा नए भवनों को अंतरराष्ट्रीय लुक देकर आकर्षक बनाने की योजना है।

केंद्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान में पच्चीस लाख की तीन नई कारें व नो लाख के तीस नए एसी के साथ साथ पच्चीस लाख के कंप्यूटर व अन्य उपकरण खरीद किए गए हैं। हालांकि उक्त पुराने सामानों को नीलाम करने से संस्थान को चालीस लाख की आय हुई है।

यह है टारगेट

निदेशक डॉ. एस.एम. के. नकवी ने बताया कि संस्थान में विश्वविद्यालय स्तर का दर्जा दिलाने की कोशिश की जा रही है जल्दी ही यहां राजस्थान वेटनरी एनीमल साइंस केंद्र शुरू होगा। संस्थान में किसान हॉस्टल का निर्माण कराने सहित चार दीवारी एवं कृषि भूमि संरक्षण कार्य होगा।

निदेशक डॉ. नकवी के अनुसार संस्थान में स्वीकृत 88 वैज्ञानिकों के पदों को भरने का लक्ष्य है तथा एक सौ अन्य कर्मचारियों की नियुक्तियां करने की योजना प्रगति पर है। संस्थान में पीजी व पीएचडी की पढाई की सुविधा के लिए अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय स्थापित कराने का लक्ष्य है। तीन बच्चे देने वाली भेड़ों के विकास पर जोर दिया जा रहा है। खाद व बीज तैयार करने के साथ हस्तशिल्प ऊनी उत्पाद का प्रशिक्षण देकर महिलाओं को आगे बढाने पर ध्यान दिया जा रहा है। खादी व हेंडलूम कपड़ों मे ऊन के प्रयोग पर शोध किया जा रहा है।

ये हैं उपलब्धियां

निदेशक डॉ. नकवी के अनुसार संस्थान द्वारा कई उपलब्धियां अर्जित करने की जानकारी दी है। ऊन व अधिक बच्चे पैदा करने के साथ अधिक मांस की भेड़ों की नस्ल तैयार की गई है। अविकालीन नस्ल की भेड़ की ऊन कारपेट बनाने के काम आती है। अच्छी गुणवत्ता युक्त ऊन के लिए भारत ने मेरीनो नामक भेड़ की नस्ल तैयार की है। एक साथ तीन बच्चे देने वाली भेड़ें तैयार की गईं। भेड़ों में प्रजनन क्षमता बढ़ाने की तकनीक के साथ जब चाहे गर्भाधान करने की स्पंज नामक तकनीक विकसित की गई है। इसकी राष्ट्रीय स्तर पर मांग है। पशमीना ऊन की जांच की तकनीक विकसित की व थ्री-टायर चारा विकास, संपूर्ण अहार बट्टिका, मींगणी तथा ऊन मिश्रित खाद की तकनीक कम पानी में अधिक उपज देने वाली साबित हुई है। संस्थान का नया विजन मोर फॉर लेस कम स्त्रोत से अधिक उत्पाद करना है।